टिप्पणी

301hi23

23

गजानन माधव मुक्तिबोध

अक्सर आपने ध्यान दिया होगा कि लोग घर से बाहर किसी काम के लिए निकलते हैं और चौराहे पर पहुँचते ही कोई-न-कोई आता-जाता मिल जाता है और घंटों बातों का सिलसिला छिड़ जाता है। हर प्रकार की खबरें, समस्याएँ आदि इस चौराहे पर मिलती हैं। आइए इस पाठ में एक ऐसी ही कविता पढ़ते हैं। अब तक आप नई कविता धारा की कुछ कविताएँ अवश्य पढ़ चुके हैं। इस पाठ में हम नई कविता के सशक्त कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की एक कविता – 'मुझे कदम-कदम पर' पढ़ेंगे। यह कविता 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' नामक काव्य-संग्रह में संकलित है। 'मुझे कदम-कदम पर' कविता में रचनाकार ने कविता की रचना-प्रक्रिया को बताया है और विचारों के द्वंद्वों को चौराहा मानकर जगह-जगह बिखरे विषयों में से उपयुक्त विषय के चुनाव को एक चुनौती बताया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- असमंजस की स्थिति से उबरकर सही निर्णय लेने के महत्त्व को बता सकेंगे;
- 'चौराहा' शब्द का प्रतीक रूप में विवेचन कर सकेंगे;
- साहित्य सृजन के लिए उपलब्ध विषयों की विविधता और उनके उपयुक्त चुनाव में रचनाकार की कठिनाई बता सकेंगे;
- कविता के भावपक्ष पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- कविता के भाषा-सौंदर्य तथा शिल्प-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगें;

हिंदी

क्रियाकलाप

नीचे दिए चित्र को देखकर आपके मन में क्या-क्या विचार आते हैं? यहाँ लिखिए–

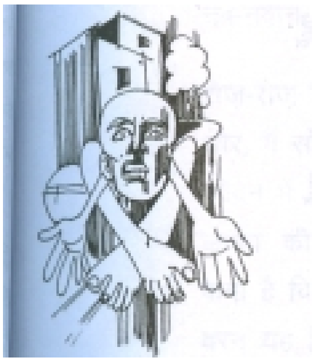

चित्र 23.1

23.1 मूलपाठ

आइए एक बार इस कविता को पढ़ लें:

'मुझे कदम-कदम पर'

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहें फैलाए !
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं
व मैं उन सब पर से गुज़रना चाहता हूँ,
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने सपने ...
सब सच्चे लगते हैं;
अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ;
जाने क्या मिल जाए!

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,

शब्दार्थ

तजुर्बे – अनुभव
अकुलाहट – व्याकुलता
गहरे में उतरना – तह तक जाना, गंभीर प्रयास करना
आत्मा अधीरा – व्याकुल मन
सुस्मित – मुस्कान
विमल – स्वच्छ
सदानीरा – सदैव जल से भरी हुई नदी

टिप्पणी

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ,
इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ,
अजीब है ज़िंदगी !
बेवकूफ़ बनने की खातिर ही
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ,
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण, मत्त हुआ जाता है,
कि जगत...स्वायत्त हुआ जाता है।

कहानियाँ लेकर और
मुझको कुछ देकर ये चौराहे फैलते
जहाँ ज़रा खड़े होकर
बातें कुछ करता हूँ...
...उपन्यास मिल जाते।

दु:ख की कथाएँ, तरह-तरह की शिकायतें
अहंकार-विश्लेषण, चारित्रिक आख्यान,
ज़माने के जानदार सूरे व आयतें
सुनने को मिलती हैं!

कविताएँ मुस्कराकर लाग-डाँट करती हैं।
प्यार की बात करती हैं।
मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएँ चढ़ाती हैं।

घबराए प्रतीक और मुसकाते रूप-चित्र
लेकर मैं घर पर जब लौटता...
उपमाएँ, द्वार पर आते ही कहती हैं कि
सौ बरस और तुम्हें
जीना ही चाहिए।

शब्दार्थ

- महाकाव्य पीड़ा – ऐसी वेदना जिस पर एक महाकाव्य लिखा जा सके।
- हँस-हँसकर – हँसते-हँसते
- अश्रुपूर्ण – आँखों में आँसू भरे होना
- मत्त होना – पागल होना
- स्वायत्त – जिस पर अपना अधिकार हो
- अहंकार – गर्व, घमंड
- आख्यान – कथा
- सूरे व आयतें – पवित्र कुरान की पंक्तियाँ, यहाँ आशय है आज के समय के व्यवहार को नियम के रूप में पेश करने की प्रवृत्ति
- लाग-डाँट करना – प्रेम पूर्ण उलाहना देना
- प्रतीक – प्रतिरूप, समता, तुलना

टिप्पणी

घर पर भी, पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाँहें फैलाए रोज़ मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं
नव-नवीन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय

रोज़-रोज़ मिलते हैं...
और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है!

शब्दार्थ

आधिक्य – अधिकता

23.2 बोध प्रश्न

1. अनेक राहें देखकर कवि क्या करना चाहता है?

....

2. कविताएँ मुस्कराकर प्यार भरी बातें किससे क्यों करना चाहती हैं?

....

3. 'प्रत्येक छाती में एक अधीर आत्मा का निवास है।' ऐसा कवि क्यों मानता है?

....

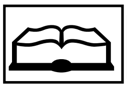

23.3 आइए समझें

'मुझे कदम-कदम पर' कविता एक बार पुनः पढ़ लीजिए।

संदर्भ

'मुझे कदम-कदम पर' शीर्षक कविता 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' नामक कविता-संग्रह से ली गई है। इसके रचनाकार श्री गजानन माधव मुक्तिबोध हैं।

प्रसंग

'मुझे कदम-कदम पर' कविता का भाव समझने के लिए पहले आप कविता की अंतिम सात पंक्तियाँ फिर से ध्यानपूर्वक पढ़ जाइए:

टिप्पणी

और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है।

इन पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि जीवन की वास्तविकता इतनी विस्तृत है कि लेखक या कवि को पग-पग पर चौराहे, सौ-सौ राहें और नवीन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय रोज़-रोज़ मिलते हैं। ऐसी स्थिति में रचनाकार की कठिनाई यह नहीं है कि रचना करने के लिए विषयों की कोई कमी है, बल्कि विषय तो बहुत अधिक हैं। समस्या है सही और उपयुक्त विषय का चुनाव करने की। आज के समय में उपयुक्त विषय का चुनाव करना एक चुनौती भरा कार्य है।

अब एक बार इस पूरी कविता को पढ़िए।

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहें फैलाए!
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटती
व मैं उन सब पर से गुज़रना चाहता हूँ,
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने-सपने ....
सब सच्चे लगते हैं;
अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ;
जाने क्या मिल जाए!

आपने कविता पढ़ी, न! क्या आप बता सकते हैं कि इस कविता में 'चौराहे' शब्द का क्या अर्थ है? जी हाँ, आप जानते हैं कि चौराहा वह स्थान है जहाँ से कई रास्ते निकलते हैं। ये चौराहे विचारों के क्षेत्र में भी होते हैं। जब आप किसी एक बात पर विचार करना प्रारंभ करते हैं, तो चिंतन के फलस्वरूप आपको अनेकानेक विचार आने लगते हैं। यह एक प्रकार से विकल्पों की स्थिति होती है। उन विकल्पों में से उपयुक्त का चुनाव करना ही चुनौती है। इस प्रकार की स्थितियाँ अक्सर हमारे समक्ष आकर खड़ी हो जाती हैं। उदाहरण के लिए कभी आप सोचते होंगे, मैं हिंदी का यही पाठ पढ़ लेता तो दूसरे ही क्षण आपको लगता होगा कि नहीं, मैं इस समय गणित के कुछ बचे हुए सवाल हल कर लेता तो अच्छा होता! यह समस्या भी चुनाव की समस्या है। आपके पास जितने अधिक रास्ते या विकल्प होते हैं, उतनी ही उलझन बढ़ती जाती हैं।

चित्र 23.2

व्याख्या

आइए, कविता के पहले आधे अंश को पुनः पढ़कर समझने का प्रयास करते हैं।

इन पंक्तियों में कवि ने जिन चौराहों के कदम-कदम पर मिलने की बात कही है, वे कवि को चयन की चुनौती के रूप में अक्सर सामने खड़े नज़र आते हैं और वह अपनी चिंतन प्रक्रिया प्रारंभ कर देता है। विचारों का क्रम ज़रा-सा आगे बढ़ता है, तो उसे

और सौ राहें निकलती नज़र आती हैं। कवि उन सभी राहों पर चलना चाहता है अर्थात् उन सभी से गुज़रना चाहता है, उन सभी के अनुभव प्राप्त करना चाहता है। कवि ने चौराहों को सकारात्मक दृष्टि से देखते हुए उन्हें विकल्प भी माना है। ये विकल्प नित्य-प्रतिदिन व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यदि व्यक्ति एक विकल्प पर चिंतन आरंभ करता है, तो अन्य अनगिनत विकल्प उसके समक्ष प्रकट होने लगते हैं। कवि को प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव बहुत अच्छे लगते हैं और साथ ही उसे अपनी कल्पनाएँ, अपने सपने भी बहुत अच्छे लगते हैं। वह उन सभी अनुभवों को सँजोकर रखना चाहता है। अधिक से अधिक अनुभव इकट्ठे करने के चक्कर में वह समाज के हर एक व्यक्ति से मिलता है। उसका मन सभी से मिलकर बात करने के लिए छटपटाता है। वह हर बात की तह में उतरकर बात की सच्चाई जान लेना चाहता है। यह सोचकर कि न जाने किस व्यक्ति के अनुभवों में विचित्रता, विशिष्टता हो, वह उन सभी के पास जा-जाकर उनके दुख-सुख बाँट लेना चाहता है।

आगे कवि कहता है कि उसे इस बात का भी भ्रम होता है कि सड़क पर पड़ा हुआ साधारण-सा दिखने वाला पत्थर भी कहीं हीरा तो नहीं! अर्थात् सड़क पर आता-जाता साधारण-सा दिखने वाला व्यक्ति कहीं महत्त्वपूर्ण और विशेष तो नहीं। यहाँ कवि को लगता है कि समाज का हर व्यक्ति चमकता हुआ हीरा है। ठीक उसी प्रकार जीवन-जगत में छोटा-सा महसूस होने वाला महत्त्वहीन अनुभव कभी-कभी समय आने पर विशिष्ट हो जाता है और किसी महत्त्वपूर्ण घटना को जन्म दे देता है। कवि को लगता है कि प्रत्येक प्राणी के वक्षस्थल में एक अधीर आत्मा विद्‌यमान है, जो कुछ-न-कुछ कर गुज़रने को लालायित है। कवि को हर मुस्कराते चेहरे से प्रेम की निर्मल धारा फूटती नज़र आती है। उसे यह भी भ्रम होता है कि हर व्यक्ति के अंतर्मन में बहुत-से पीड़ादायक और साथ ही खुशी के अनुभव विद्यमान हैं, यदि वह उन्हें लिखने बैठे तो रामायण या महाभारत जैसे महाकाव्य की रचना हो सकती है।

यह सभी कुछ सोच-विचार कर रचनाकार जल्दी-जल्दी उन सभी के अनुभवों को बटोर लेना चाहता है। सभी से सहानुभूतिपूर्वक बातचीत करता है, उनके दुख-दर्द बाँटता है, उनमें रुचि लेता है, अपना समय लगाता है, अपनी शक्ति लगाता है और इस तरह स्वयं को दिए-दिए फिरता है। परंतु कवि कहता है कि ज़िंदगी के खेल ही निराले हैं। समाज का हर व्यक्ति मुझ जैसे व्यक्ति को जो दूसरों के दुखों को अपना मानकर जीते हैं; बेवकूफ़ करार देता है। कवि को लगता है सभी लोग उसे बेवकूफ़ समझकर ठगते हैं, पर उसे अपने ठगे जाने में कोई परेशानी नहीं होती और वह उसमें अत्यधिक खुशी का अनुभव करता है और अपूर्व आनंद की प्राप्ति कर पागल-सा हो जाता है। वह सोचता है कि मेरे अंदर एक प्रसन्नचित्त मूर्ख बैठा है, जो दूसरों से ठगे जाने पर भी खुश होता है। यह अनुभव उसे और भी अजीब और अटपटा लगता है कि समाज अपने आप में सिमटता जा रहा है। उसे रचनाकार की समस्या से कुछ भी लेना देना नहीं है।

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ,
इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ,
अजीब है ज़िंदगी!
बेवकूफ़ बनने की खातिर ही
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ,
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण, मत्त हुआ जाता है,
कि जगत...स्वायत्त हुआ जाता है।

टिप्पणी

टिप्पणी

1. कविता प्रतीकात्मक भाषा में है।
2. रचनाकार के सामने लेखन के लिए विषय बहुत हैं, वह प्रत्येक का अनुभव लेना चाहता है और विषय-चयन एक जटिल समस्या बन जाता है।
3. 'देख-देख बड़ा मज़ा आता है कि मैं ठगा जाता हूँ' उपर्युक्त कथन की तुलना कबीर के निम्नलिखित दोहे से की जा सकती है–

   कबीरा आप ठगाइए और न ठगिए कोय।
   आप ठगे सुख होत है और ठगे दुख होय।।
4. अपनी बात पर बल देने के लिए कहीं-कहीं शब्दों को बार-बार प्रयोग किया गया है:

   इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ।
   अजीब है ज़िंदगी!
   बेवकूफ बनने की ख़ातिर ही सब तरफ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ
   और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
   कि मैं ठगा जाता हूँ।
5. चौराहे, पत्थर, चमकता हीरा आदि प्रतीकों का सहारा लेकर मुक्तिबोध ने कविता को नया संस्कार दिया है। यहाँ 'चौराहा' विकल्पों का, 'पत्थर' आम मनुष्य और 'चमकता हीरा' विशिष्ट अनुभव, घटना अथवा व्यक्तित्व का प्रतीक है।

अंश - 2

व्याख्या

समाज के सभी व्यक्यिों के अनुभवों को अपने साथ कहानियों के रूप में संजोकर जब कवि आगे बढ़ता है, तो उसे अपने चिंतन का क्रम आगे फैलता नज़र आता है अर्थात् विचारों का क्रम आगे-आगे विस्तार पाता है, जिसमें इतनी सामग्री एकत्रित हो जाती है कि एक उपन्यास की रचना की जा सके।

इसी क्रम में रचनाकार को व्यक्तियों के दुख-दर्द की कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। यहीं पर समाज के लोग तरह-तरह की शिकायतें करते हैं। ये शिकायतें कभी सरकारी काम-काज की व्यवस्था पर हो सकती हैं या फिर अनुशासन चलाने वाले लोभी या गिरते हुए सामाजिक मूल्यों पर भी हो सकती हैं। विभिन्न व्यक्तियों का अहंकार भरा काला चिट्ठा भी इसी चौराहे पर सुनने को मिलता है। यह सब ऐसे पेश किया जाता है जैसे पवित्र कुरान के कथन हों अर्थात् समाज इन पर बल देता है। इन्हें बड़ी रुचि के साथ सुनता-सुनाता है। आगे कवि कहता है कि इन सभी जटिलताओं से जकड़े अनुभवों और व्यक्तियों के चेहरों की स्मृतियाँ लेकर जब कवि घर लौटता है तो विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियाँ घर के द्वार पर आकर कहती हैं कि हमारी संख्या इतनी अधिक है जो सौ वर्ष तक प्रयोग करने पर भी समाप्त नहीं होंगी और तुम्हें हमारे लिए सौ वर्ष तक और जीवित रहना पड़ेगा।

कवि आगे कहता है कि घर पर आकर भी विचारों का यह क्रम आगे बढ़ता चला जाता है, यहाँ पर भी तरह-तरह के अनुभव और चिंतन की धाराएँ आकर खुले दिल से

कहानियाँ लेकर और
मुझको कुछ देकर ये चौराहे फैलते
जहाँ जरा खड़े होकर
बातें कुछ करता हूँ...
...उपन्यास मिल जाते।

दु:ख की कथाएँ, तरह-तरह की शिकायतें
अहंकार-विश्लेषण, चारित्रिक आख्यान,
ज़माने के जानदार सूरे व आयतें
सुनने को मिलती हैं!

कविताएँ मुस्कराकर लाग-डाँट करती हैं।

उसका स्वागत करती हैं। जिस प्रकार वृक्ष से अनेक शाखाएँ निकल कर चारों ओर फैलती हैं, उसी प्रकार कवि के आत्म-चिंतन का क्रम भी आगे बढ़ता चला जाता है, फैलता जाता है। प्रतिदिन, प्रति पल नए-नए विषय अचानक कवि के सम्मुख आ जाते हैं।

अंत में, कवि कहता है कि आज रचनाकार के पास विषयों का अभाव नहीं है। विषयों की संख्या बहुत अधिक है, परंतु समस्या केवल सही और उपयुक्त चुनाव की है। सही विषय का चुनाव करने का काम रचनाकार के लिए बहुत कठिन कार्य है।

टिप्पणी

1. कविता आम बोल-चाल की सरल भाषा में लिखी गई है, उदाहरण के लिए पहली पंक्ति ही देखें–

   'मुझे कदम-कदम पर
   चौराहे मिलते हैं बाँहें फैलाए।'

2. हिंदी में नई कविता की विशेषता रही है परिपाटीबद्ध कविता के विरुद्ध विद्रोह। नई कविता परंपरागत छंदों का बंधन नहीं स्वीकारती, किंतु लय और प्रवाह इसमें भी होता है। नई कविता ने अपने ही छंद गढ़े हैं।
3. *'घबराए प्रतीक', 'मुस्काते रूप चित्र', 'कविताएँ मुस्करा कर लाग-डाँट करती हैं/प्यार की बात करती हैं/मरने और जीने की सीढ़ियाँ श्रद्धाएँ चढ़ाती हैं'* में मानवीकरण अलंकार है।
4. इसमें एक ओर तो राहें, गुजरना, तजुर्बे, ज़िंदगी, खातिर आदि उर्दू भाषा के आगत शब्द हैं तो दूसरी ओर सुस्मित, विमल सदानीरा, वाणी, प्रसन्नचित, अश्रुपूर्ण जैसे संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों का प्रयोग कवि ने कुशलता के साथ किया है।
5. मुक्तिबोध मध्यमवर्गीय परिवार के थे। वे अक्सर मित्रों और जान-पहचान वालों के साथ किसी चाय के ढाबे पर या होटल में बैठकर दुख-दर्द बाँटा करते थे। घंटों बातें हुआ करती थीं। दैनिक जीवन की इन घटनाओं से मुक्तिबोध को कविता-लेखन की प्रेरणा मिलती थी।
6. इस कविता में कवि ने अपनी रचना-प्रक्रिया को स्पष्ट किया है कि किस प्रकार वह विषयों को आस-पास बिखरा हुआ पाता है और फिर कविता, कहानी, महाकाव्य, उपन्यास आदि के उपयुक्त विषयों को अलग-अलग करता है। उन्हें अभिव्यक्ति देने के लिए बिंबों, प्रतीकों, उपमाओं आदि की पहचान करता है। मुख्य बात है विषय के चुनाव की। कवि इसे एक चुनौती भरा कार्य मानता है।
7. पूरी कविता एक ही केंद्र के चारों ओर रची गई है कि विषय का चुनाव एक चुनौती है। यदि समय पर सही चुनाव होगा तो जीवन सार्थक हो जाएगा। अंग्रेज़ी में भी एक प्रसिद्ध कहावत है–Choice is your's, future is your's.
8. *'मुझे भ्रम होता है प्रत्येक पत्थर में चमकता हीरा है।'* अर्थात् महत्त्वहीन अनुभव विशिष्ट घटना को जन्म देता है। कभी-कभी छोटी-से-छोटी घटना में विलक्षण अनुभव प्राप्त हो जाता है। ऊपर से साधारण दिखने वाली वस्तु भीतर से असाधारण और अद्भुत हो सकती है। पत्थर और हीरे की तुलना इसी संदर्भ में की गई है। आप जानते होंगे कि वाल्मीकि कवि होने से पहले बहुत बड़े डाकू थे। कुछ साधुओं के संपर्क में आने पर उन्होंने यह पेशा त्याग दिया। एक दिन उन्होंने

टिप्पणी

प्यार की बात करती हैं।
मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएँ चढ़ाती हैं।

घबराए प्रतीक और मुसकाते रूप-चित्र
लेकर मैं घर पर जब लौटता...
उपमाएँ, द्वार पर आते ही कहती हैं
कि सौ बरस और तुम्हें
जीना ही चाहिए।

घर पर भी, पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाँहें फैलाए रोज़ मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं
नव-नवीन रूप-दृश्य वाले सौ–सौ विषय
रोज़-रोज़ मिलते हैं.........
और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है!

एक शिकारी को उस मादा क्रौंच का वध करते देखा जो रति क्रीड़ा में मग्न थी। उन्हें यह देख बहुत दुख हुआ और अनायास ही उनके मुख से कुछ पंक्तियाँ प्रस्फुटित हुईं। यही उनके जीवन का प्रथम छंद था और यही कविता की शुरूआत थी। इस छोटी-सी घटना ने उन्हें कवि बना दिया और उन्होंने रामायण जैसे महाकाव्य की रचना कर दी।

पाठगत प्रश्न 23.1

1. 'कविताएँ मुस्कराकर लाग डाँट करती हैं', पंक्ति का अर्थ है कविताएँ–
   (क) छेड़खानी करती हैं।
   (ख) पीछे-पीछे लग जाती हैं।
   (ग) मुस्कराकर खिल्ली उड़ाती हैं।
   (घ) न लिखे जाने का उलाहना देती हैं।
2. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता में 'चौराहा' शब्द प्रतीक है–
   (क) चार रास्तों का।
   (ख) विकल्पोंऽकी अधिकता का
   (ग) बाज़ार के बीचों-बीच भटकने का।
   (घ) कुछ समझ में न आने का।
3. सही वाक्य पर (√) और गलत पर (X) का चिह्न लगाइए–
   (क) कवि सभी के अनुभवों को सुनना चाहता है। ( )
   (ख) प्रत्येक मनुष्य में कोई न कोई विलक्षणता संभव है। ( )
   (ग) कवि को लगता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य के समान अथाह पीड़ा हो, संभव ही नहीं है। ( )
   (घ) दूसरों को ठगने में जितना आनंद आता है, उतना ही आनंद स्वयं को जान बूझ कर ठगवाने में भी आता है। ( )
   (ङ) हर व्यक्ति स्वायत्त है। ( )

23.4 शिल्प सौंदर्य

आपने मुक्तिबोध की कविता पढ़ी। क्या आप बता सकते हैं कि इस कविता में कवि ने 'मैं' और 'मुझे' का प्रयोग क्यों किया है?

अपने विचार लिखिए–

____

____

जी हाँ ! शायद आप ठीक समझे 'मैं' और 'मुझे' का प्रयोग कवि ने अपने लिए किया है। पर 'मैं' का अर्थ इस कवि जैसी विचारधारा रखने वाले अन्य लोगों से भी है, जो कवि द्वारा प्रयुक्त 'मैं' शब्द में निहित है। यह कविता स्वयं को केंद्र में रखकर रची गई है। अतः यह आत्मपरक संरचना की कविता है। इस कविता में 'मैं' शब्द के साथ कवि अपने जैसे व्यक्तियों को लेकर अपनी बात कहना चाह रहा है।

गजानन माधव मुक्तिबोध नयी कविता के श्रेष्ठतम कवि माने जाते हैं। इनकी कविताएँ जीवन के गहन भावों को अभिव्यक्त करती हैं। जीवन का यथार्थ बताती हैं। 'मुझे

कदम-कदम पर' कविता में कवि ने विकल्पों और अनुभवों को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा है कि मैं और मेरे जैसे अन्य रचनाकारों के लिए विषय का अभाव नहीं है, बल्कि मुख्य परेशानी अच्छे और सटीक विषयों के चयन की है। यह कविता मन के भावों को आधार मानकर रची गई है।

➔ कविता में बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। कलात्मक होते हुए भी यह कवि के भावों को पूरी सामर्थ्य के साथ अभिव्यक्त करती है–

मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएँ चढ़ाती हैं।
उपमाएँ, द्वार पर आते ही कहती हैं कि
सौ बरस और तुम्हें
जीना ही चाहिए।

➔ एक ही शब्द का बार-बार प्रयोग करने से काव्य-सौंदर्य में निखार आता है और पाठक के दिल पर गहरा प्रभाव पड़ता है, कवि ने इस कविता में इस प्रकार के सफल प्रयोग किए हैं, जैसे–

नव-जीवन रूप दृश्य वाले सौ-सौ विषय
रोज़-रोज़ मिलते हैं...
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ...

जब एक शब्द का प्रयोग एक से अधिक बार किया जाए, तो वहाँ **पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार** होता हैं।

➔ इस कविता को पढ़कर आपने अवश्य ही अनुभव किया होगा कि कवि का भाषा पर अच्छा अधिकार है। कवि ने अभिव्यक्ति की सामर्थ्य के अनुकूल ही भाषा के तत्सम और आम भाषा के शब्दों का भरपूर परंतु संतुलित प्रयोग किया है, जैसे–

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,

इन पंक्तियों में तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है तो नीचे की पंक्तियों में आम बोलचाल के शब्दों का–

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहें फैलाए!

➔ जब कविता में किसी शब्द या कथन का इस तरह प्रयोग किया जाए कि वह किसी दूसरी वस्तु या विचार की ओर संकेत करे तो उसको **प्रतीक** कहा जाता है। इस कविता में चौराहे विकल्पों का प्रतीक है।

➔ काव्य में बिंब-विधान का भी बहुत महत्त्व होता है। पिछले पाठ में भी आपने

इसके बारे में पढ़ा है। विषय सामग्री के वर्णन के अनुरूप स्वरूप का बोध ही बिंब कहलाता है। अनुभवों को सजीव रूप में प्रस्तुत करने में **बिंब** उपयोगी सिद्ध होते हैं। कवि का दृष्टिकोण सौंदर्यवादी न होकर जीवनवादी अर्थात् उपयोगितावादी और व्यवहारवादी है। अतः कविता में बिंब के प्रयोग से अनोखा सौंदर्य उत्पन्न हो जाता है। इस कविता में दृश्य बिंब का प्रयोग किया गया है। ऐसा लगता है मानो आँखों के सामने एक चित्र-सा खड़ा कर दिया गया है।

मुझे कदम कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाहें फैलाए।
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं,
मैं उन सब पर से गुज़रना चाहता हूँ

पाठगत प्रश्न 23.2

1. कविताएँ मुस्कराकर लाग-डाँट करती हैं।
   प्यार की बात करती हैं।
   कविता की उपर्युक्त पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?
2. कवि ने कुछ अपने मुहावरे गढ़े हैं। कविता से ऐसे मुहावरे चुनकर लिखिए

23.5 आपने क्या सीखा

1. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता में बताया गया है कि चौराहे मिलना बहुत अच्छा है। ये रास्ते में संकट बनकर नहीं, बल्कि विकल्प बनकर हमारे सामने आते हैं यानी हमारे समक्ष जितने रास्ते होंगे, उतने ही विकल्प होंगे और हम उनमें से जो भी विकल्प चुनेंगे वह अपने आप में अनेक अन्य विकल्प लिए हुए होगा। अतः जीवन के लिए किसी भी अनुभव को व्यर्थ नहीं समझना चाहिए। सभी का अपना महत्त्व होता है।
2. आज के रचनाकार की समस्या विषयों की कमी नहीं है। विषय तो सड़क पर, दफ्तरों में या घर पर भी उपलब्ध हो सकते हैं। बल्कि विषय तो अनेकानेक हैं पर उनका चुनाव करना अपने आप में एक गंभीर और चुनौती भरा कार्य है।
3. इस कविता में कवि का दृष्टिकोण व्यवहारवादी है।
4. कविता में कई स्थानों पर पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग है। अपनी बात अस्पष्ट रूप से कहने के लिए कवि ने प्रतीकों का प्रयोग किया है।

23.6 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

गजानन माधव मुक्तिबोध सुप्रसिद्ध और विशिष्ट कवि हैं। नयी कविता के क्षेत्र में

मुक्तिबोध का विशेष और ऐतिहासिक योगदान है।

मुक्तिबोध का जन्म ग्वालियर ज़िले में सन् 1917 में हुआ था। बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त कर वे अध्यापन के कार्य में जुट गए थे। साथ ही पत्रिका संपादन का कार्य भी करते थे। मुक्तिबोध मध्यमवर्गीय परिवार के थे। मूलतः मराठी भाषी होते हुए भी प्रयोगवाद और नई कविता के कवियों में आपने शीर्ष स्थान बना लिया। आपकी कविताएँ पहली बार 'तार सप्तक' में प्रकाशित हुईं।

आपने अनेक लंबी कविताएँ लिखीं, जो जीवन के अनेक विकट संघर्षों से जूझते रहने और मनुष्य की जीवन शक्ति की पहचान करने पर आधारित हैं। आपने एक ओर परिपाटीबद्ध भारतीयता का विरोध किया तो दूसरी ओर अपनी अस्मिता, अपनी निजता की स्थापना की। आप सही अर्थों में बुद्धिजीवी और विचारक कवि थे। आपकी मृत्यु 1964 में दिल्ली में हुई। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'भूरी-भूरी खाक धूल', 'एक साहित्यिक की डायरी', 'कामायनी : एक पुनर्विचार' आदि इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। मृत्यु के पश्चात् आपकी सभी रचनाएँ 'मुक्तिबोध रचनावली' के नाम से छह खंडों में प्रकाशित हैं।

मुक्तिबोध की भाषा आम बोल-चाल की हिंदी है जो अरबी-फारसी मूल के शब्दों को समाहित किए हुए है। सन् साठ के बाद की सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों को उन्होंने फंतासी अर्थात् स्वप्न-चित्र के माध्यम से कविताओं में अभिव्यक्त किया है। व्यक्ति के पतन और सामाजिक दायित्वों से मुख मोड़ लेने की धिक्कारमयी कथा उनकी लगभग सभी कविताओं में देखने को मिलती है। कविता के विषय की वैचारिक जटिलता को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने प्रतीकों तथा बिंबों का प्रयोग जान बूझकर किया है। इस कारण उनकी कविता बोध के स्तर पर थोड़ी दुरूह भी हो गई है।

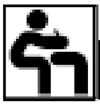

23.7 पाठांत प्रश्न

1. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।
2. कवि ने चौराहे को अच्छा क्यों माना है?
3. कवि को सड़क पर पड़ा हर पत्थर हीरा क्यों नज़र आता है? क्या आप कवि के विचारों से सहमत हैं?
4. कवि की दृष्टि में आज के लेखक की परेशानी क्या है?
5. निम्नलिखित काव्यांशों की व्याख्या कीजिए–

   (क) मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में

   चमकता हीरा है,
   हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है
   प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
   मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
   महाकाव्य पीड़ा है,
   पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ,
   इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ,
   अजीब है ज़िंदगी!

टिप्पणी

बेवकूफ़ बनने के खातिर ही
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ,

(ख) जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है।

6. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता की भाषा पर उदाहरण सहित टिप्पणी लिखिए।

7. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

जब जब सिर उठाया
अपनी चौखट से टकराया
मस्तक पर चोट लगी,
मन से उठी कचोट,
अपनी ही भूल पर मैं
बार-बार पछताया।

(क) कविता में कवि ने चौखट शब्द का प्रयोग क्यों किया है?
(ख) मस्तक पर चोट लगने से कवि का क्या आशय है?
(ग) कवि अपनी किस भूल को रेखांकित करना चाहता है?
(घ) कचोट शब्द का शब्दिक अर्थ बताइए।

23.8 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. सभी राहों से होकर गुजरना
2. कवि से, मुखरित होने के लिए
3. जिससे बात कीजिए वही अनेक दुख भरी दास्तान सुनाने लगता है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1 1. (घ) 2. (ख)
3. (क) √ (ख) √ (ग) X (घ) √ (ङ) X

23.2 1. मानवीकरण
2.
- कदम-कदम पर चौराहे मिलना
- सौ राहें फूटना
- महाकाव्य पीड़ा होना
- जानदार सूरे और आयतें सुनना
- जलती हुई सीढ़ियाँ चढ़ाना